

VALOUR & SACRIFICE- 1965 WAR

Honour, selfless service and the spirit of sacrifice are ingrained tenets of the Indian Armed Forces, preserved as part of their glorious tradition, enabling them to acquit themselves commendably both in war and peace. In the face of grave personal danger, the Indian Soldier, Sailor and Air Warrior has never hesitated in making the supreme sacrifice in the line of duty, a fact that has been evident throughout the history of our Nation, in the face of many challenges faced. One such example of valour of soldiers of Armed Forces was witnessed in 1965, wherein our Armed Forces exhibited tremendous grit, determination and fortitude, living up to the faith reposed in them by the Indian Nation and its leaders.

Right from October 1947, when it engineered a tribal invasion to capture Kashmir, Pakistan had chosen to follow a path of conflict with India and sought to achieve by war what it could not achieve through diplomacy. In August and September of 1965, the Indian Armed Forces were put to test by Pakistan for a second time, when Pakistan forces attacked Kutch in Western India. Subsequent skirmishes in the Kashmir valley by infiltrators, were designed to surprise the Indian Armed Forces. The incursions at the end of August and an all-out attack by Pakistani armour in the Chhamb area of Jammu Province later, was with the obvious objective of cutting the Jammu-Srinagar highway.

Having launched Op Gibraltar and Op Grand Slam, the Pakistan Armed Forces were confident of quick success. The Indian Armed Forces, despite being lightly equipped in all sectors, fought valiantly in the true spirit of the Indian Soldier, with resilience to adversity. The Pakistan Armed Forces were in for a rude shock when operations by Indian Armed Forces brought their offensive in both the Western and Eastern Sectors to a screeching halt. This was achieved through leadership and adroit application of operational art. The timely entry of the Air Force into the conflict provided additional impetus that eventually stalled Pakistan's nefarious designs, especially in the Chhamb-Jaurian Sector.

Significant endeavours of the Indian Armed Forces during the 1965 War were the capture of Hajipir, blunting of the Pakistani offensive in Chhamb-Jaurian, Battle of Asal Uttar, the Ichhogil Canal operations and the advance onto Lahore. The tank battles of 1965 take their place in annals of military history as the most intense ones used since World War II. On 10th September 1965, the Indian Armed Forces stuck a massive blow to the armada of Pakistani tanks when the offensive of Pakistan's 1st Armoured

Division was blunted at the Battle of Asal Uttar, in the Khemkaran Sector.

Poised against the Pakistani Air Force which was equipped with a much more 'modern' inventory of fighter aircraft, the Indian Air Force (IAF) responded with alacrity to the call for air support, and succeeded in thwarting the Pakistani offensive. The IAF proved its mettle in each of the operations carried out, both in the Western as well as the Eastern Sector. The grit and valour displayed by our Air Warriors was yet another glorious chapter in the history of the IAF.

The Indian fleet was deployed to ensure defence of the Western and Eastern Coasts and the island territories. Given the Government's determination to limit the scope of the conflict as much as possible, the Indian Fleet flying the flag of Rear Admiral BA Samson onboard INS Mysore, remained vigilant and carried out intensive patrols and sweeps within India's continental shelf. The Alize and Seahawk aircraft of the Indian Navy carried out sorties from 10 Sep - 23 Sep 1965 for maritime surveillance. By these actions Pakistan Navy was ensconced in Karachi.

The sacrifices of the 1965 War are preserved in the collective bravery displayed by the Indian Armed Forces, possible largely because of the ardent support of the entire Nation. The valour of the soldiers has been recognised through the award of 16 Battle Honours and three Theatre Honours, two PVCs besides numerous MVCs, Vrcs and Mentions-in-Despatches. The heroism of CQMH Abdul Hamid and Lt Col AB Tarapore, who were posthumously awarded the Param Vir Chakra will live on in the glorious history of our Nation.

The sacrifices of the Indian Armed Forces in 1965 is testimony to the credo that the Safety, Honour and Welfare of the country comes first, always, and every time, for the Indian Armed Forces.

The Department of Posts is pleased to release a set of three Stamps on the Army, Navy and Air Force, along with a First Day Cover and Brochure, to honour the valour and courage of the soldiers of Armed Forces of 1965 war. The Stamps depict the spirit and resoluteness of purpose displayed by the three wings of Indian Armed Forces during the 1965 war.

Credits:-

- Text : Based on the material provided by the proponent
Stamp/FDC : Nenu Gupta
Cancellation

वीरता और बलिदान-1965 युद्ध VALOUR & SACRIFICE - 1965 WAR



विवरणिका BROCHURE

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts, India

वीरता और बलिदान—1965 युद्ध

सम्मान, निःस्वार्थ सेवा और बलिदान की भावना भारतीय सशस्त्र सेनाओं में उनकी शानदार परंपरा के रूप में बखूबी समाई हुई है। अपने इन्हीं गुणों के बल पर भारतीय सशस्त्र सेनाएं युद्ध एवं शांतिकाल में अपने कर्तव्य को बखूबी निभाती आ रही हैं। खुद को गंभीर खतरे में पाकर भी देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने में भारतीय सशस्त्र सेना के तीनों अंगों के सैनिक कभी पीछे नहीं हटते हैं और अनेकों चुनौतियों का साक्षी रहा हमारे देश का इतिहास इस तथ्य का गवाह है। हमारे जांबाज सैनिकों की बहादुरी की एक मिसाल 1965 में सामने आई, जब हमारी सशस्त्र सेनाओं ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और धैर्य का शानदार परिचय देते हुए देश एवं देश के नेतृत्व के विश्वास को अडिग रखा।

कश्मीर पर कब्जा करने के मकसद से पाकिस्तान ने अक्तूबर, 1947 से ही भारत से युद्ध करने का रास्ता अपना लिया था। अपनी कूटनीतिक विफलता की भरपाई के लिए 1947 में ही पाकिस्तान ने कबायली हमला बोल दिया था। 1965 के अगस्त और सितम्बर के दौरान, पाकिस्तान ने पश्चिमी भारत के कच्छ क्षेत्र में आक्रमण कर एक बार फिर भारतीय सशस्त्र सेनाओं को चुनौती दी। इसके बाद, कश्मीर घाटी में भारतीय सशस्त्र सेनाओं को चौकाने और अस्थिर करने के उद्देश्य से घुसपैठियों द्वारा छिट-पुट वारंदातों को अंजाम दिया गया। अगस्त के अंत में हुई घुसपैठ और फिर पाकिस्तानी बख्तरबंद फौजियों द्वारा जम्मू प्रांत के छम्ब क्षेत्र में पूरी ताकत से किए गए हमले को मकसद जम्मू-श्रीनगर राजमार्ग को बंद करना था।

ऑपरेशन जिब्राल्टर तथा ऑपरेशन ग्रीड स्लैम की शुरुआत कर पाकिस्तानी फौज को यह उम्मीद थी कि उसे बहुत जल्द कामयाबी हासिल होगी। परंतु भारतीय सशस्त्र सेनाओं ने हथियारों की कमी होने के बावजूद सभी सेक्टरों में अदम्य साहस की मिसाल पेश की और सच्चे भारतीय सिपाही की भावना के साथ हर मुश्किल का डट कर मुकाबला किया। पाकिस्तानी फौज को तब गहरा झटका लगा, जब भारतीय सशस्त्र सेनाओं ने पश्चिमी और पूर्वी, दोनों सेक्टरों में उनके आक्रमण को पूरी तरह नाकाम कर दिया। यह शानदार कामयाबी कुशल नेतृत्व और बेहतरीन युद्धनीति अपनाने के कारण ही हासिल हुई। इस युद्ध में वायु सेना के सही समय पर शामिल होने से भारतीय सशस्त्र सेनाओं को नई ताकत मिली और इसी के बल पर पाकिस्तान की हर चाल को, विशेष रूप से छम्ब-जौरियन सेक्टर में, पूरी तरह से नाकाम कर दिया गया।

1965 के इस युद्ध में भारतीय सशस्त्र सेनाओं के महत्वपूर्ण विजयक्रम में हाजीपीर पर कब्जा, छम्ब-जौरियन सेक्टर में पाकिस्तानी हमले को नाकाम करना, असल उत्तर की जंग, इच्छोगिल नहर की फौजी कार्रवाई और लाहीर कूच करना शामिल था। 1965 की इस जंग के दौरान हुए टैंक युद्धों को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सैन्य इतिहास के पन्नों में सबसे भीषण युद्ध के रूप में दर्ज किया गया है। 10 सितम्बर, 1965 को भारतीय सशस्त्र सेनाओं ने पाकिस्तानी टैंकों के बड़े को उस वक्त जबरदस्त झटका दिया, जब हमारे शूरवीर सैनिकों ने खेमकरण सेक्टर में असल उत्तर के युद्ध में पाकिस्तानी फौज की फर्स्ट आर्मर्ड डिवीजन के आक्रमण का मुंहतोड़ जवाब देते हुए इसे नाकाम कर दिया।

इस युद्ध में भारत का मुकाबला पाकिस्तान की ऐसी वायु सेना से था जो अपेक्षाकृत अत्याधुनिक लड़ाकू विमानों से लैस थी। इसके बावजूद भारतीय वायु सेना ने पूरी तत्परता के साथ थल सेना का सहयोग किया और पाकिस्तानी हमले का करारा जवाब देने में कामयाब रही। भारतीय वायु सेना ने पश्चिमी तथा पूर्वी, दोनों ही सेक्टरों में हुई फौजी कार्रवाइयों में अपना लोहा मनवाया। इस जंग में हमारी वायु सेना के योद्धाओं ने जिस साहस और दिलेरी का परिचय दिया, उसने भारतीय वायु सेना के इतिहास में एक और शानदार अध्याय जोड़ दिया।

इस युद्ध के दौरान, देश के पश्चिमी तथा पूर्वी तटों और द्वीप क्षेत्रों की हिफाजत सुनिश्चित करने के लिए भारतीय बेड़े (फ्लीट) को तैनात किया गया था। सरकार का उद्देश्य इस युद्ध के प्रभाव को जहां तक संभव हो, सीमित रखने का था और इसी को ध्यान में रखते हुए रियर एडमिरल बी ए सैमसन के नेतृत्व में आईएनएस मैसूर भारतीय महाद्वीपीय शैल्य में अत्यंत चौकसी से गहन गश्त लगाता रहा। पैनी समुद्री निगरानी के लिए भारतीय नौसेना के एलीज और सीहॉक विमानों ने 10 सितम्बर - 23 सितम्बर, 1965 के बीच कई उड़ानें भरीं। इन सभी कार्रवाइयों के कारण पाकिस्तानी नौसेना कराची से आगे बढ़ने की जुरत नहीं कर सकी।

1965 के इस युद्ध के दौरान हमारे वीर सैनिकों की बलिदान की भावना भारतीय सशस्त्र सेनाओं द्वारा प्रदर्शित सामूहिक बहादुरी की गाथाओं में अमर है जो समस्त देशवासियों के उत्साहवर्द्धक समर्थन के कारण ही संभव हो सका। इस भीषण युद्ध में हमारे बहादुर सैनिकों की अप्रतिम वीरता के सम्मान में उन्हें 16 युद्ध सम्मान और 3 थियेटर ऑनर, 2 परमवीर चक्र, अनेक महावीर चक्र, वीर चक्र और मेडल-इन-डिस्टिन्क्शन से सम्मानित किया गया है। इस युद्ध में अत्यंत असाधारण वीरता का प्रदर्शन करने वाले सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद और लेफ्टिनेंट कर्नल ए बी तारापोर को मरणोपरान्त परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया और इनकी गाथा भारत के स्वर्णिम इतिहास के पन्नों में अमर रहेगी।

1965 के युद्ध में भारतीय सशस्त्र सेनाओं के वीर सैनिकों द्वारा दिए गए बलिदान इस बात का प्रमाण है कि भारत के वीर सैनिकों के लिए देश की सुरक्षा, सम्मान और इसका कल्याण सदैव सर्वोपरि है।

डाक विभाग, 1965 के युद्ध में सशस्त्र सेनाओं के सैनिकों के शौर्य और साहस के सम्मान में थल सेना, नौ सेना और वायु सेना पर तीन डाक-टिकटों का सेट और प्रथम दिवस आवरण व सूचना विवरणिका जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। इन डाक-टिकटों पर 1965 के युद्ध के दौरान भारतीय सशस्त्र सेनाओं के तीनों अंगों के सैनिकों द्वारा प्रदर्शित वीरता की भावना और दृढ़ निश्चय का अंकन किया गया है।

आधार :-

मूलपाठ	: प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक-टिकट	: नीनु गुप्ता
प्रथम दिवस आवरण/	



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: 500 पैसा : 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	: 6 लाख x 3 टिकटें : 0.6 Million x 3 Stamps
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट : Wet Offset
मुद्रक Printer	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद : Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

*1 लाख x 3 टिकटें प्रस्तावक हेतु
*0.1 Million x 3 Stamps of Proponent